।। तात्या को संवाद ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ तात्या को संवाद लिखंते ||

|| दोहा ||

कहो समाधी देस मे || क्या सुख लील बिलास ||
क्हे तात्यो गुरदेवजी || कूण देस कुण बास ||१||

(यह तात्या इन्दौर मे हुआ था,इस तात्या की बनाई हुयी,इन्दौर में बाख विहीर है । उसे तात्या की बावड़ी,ऐसा कहते है । और उसके मरने के बाद,उसके उपर छत्री बनायी गयी है, उसे तात्या की छत्री कहते है ।)तात्या बोला,अहो गुरूदेवजी,अब बताइए,समाधी के देश में क्या सुख है । और वहाँ क्या लीला है तथा वहाँ क्या विलास है । और कौन से देश में,रहने का स्थान है ? तथा वो कैसा है ? यह मुझे बताइये । || १ ||

समाधी देशमे क्या सुख है?वहॉ क्या लिला-विलास है?तथा वह देश कहाँ है यह गुरुदेवजी मुझे बतावो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से तात्या ने कहॉ ।

|| कुंडल्या ||

सुख तो मालम कुछ नही । क्यां कहुँ केसा होय ।
पण आणंद सुख बैकुंट का || दिल नही माने कोय ||
दिल नही माने कोय || इसा सुख देखे जाई ||
त्रपत व्हे जब हंस || फेर समाध लगाई ||
सुखराम क्हे सुण तांतिया || आ मालम हे जोय ||
सुख तो मालम कुछ नही || क्या कहुँ केसा होय ||१||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्याको कहॉ कि,समाधी देश मे पहुँचने के बाद जो सुख मिलता वह सुख तुझे कैसे समजाउँ?उस सुखको मायाके शब्दोमें वर्णन नही करते आता । जगत बैकुंठके मन और पाँचो विषयोका सुख मालूम है । समाधी देशके सुखके सामने बैकुंठके सुख जरासे भी मेरे जीवको नही भाते । मुझे बैकुंठका सुख समाधी सुखके सामने तुच्छ लगते ऐसे भारी सुख समाधी देश के है । बैकुंठ के सुखमे अतृप्ती यह दु:ख रहता तो समाधी देश के सुखमे तृप्ती यह आनंद रहता । तृप्त सुखोके लिये मेरा हंस बार-बार समाधी देशमे सुख लेने जाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्याको कहते है ऐसा वह तृप्त सुखका देश है । ऐसा मुझे बैकुंठके सुखोके सामने समाधी देशका सुख मालूम होता ।||१||

म्हा माई अर प्रगती || आगे जोत कहाय ||
अजर लोक लग सुख की || निजमन कहे दिल माय ||
निजमन कहे दिल माय || देस नव आगे होई ||
वांहाँ की यां हाँ गम नाय || पुरष जाणे पण सोई ||
सुखराम कहे सुण तातिया || देस प्रख रे मांय ||
म्हेमाई अर प्रगती || आगे जोत कहाय ||२||

समाधी देशमे जाते समय त्रिगुटीके आगे महामाया,प्रकृती,ज्योती तथा अजरलोक लगते है। यहॉ तकके सुखोकी जीव बात स्वयम् समजता और इसके आगे और भी नौ लोक है । वहॉ के सुखो की जानकारी यहाँ किसी भी मायावी ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी को नही है । वहॉ के सुखो की बात वे ही पुरुष जानेगे जो समाधी देश मे पहुॅचे है । इन सभी समाधी देश के रास्ते के देश के सुखो की परीक्षा स्वयम् को करते आती ।।।२।।

त्रुगटी में सुख पांच हे ।। म्हेमा मेहेरी जाण ।।
माया के सुण लोक मे ।। देवत सुख बखाण ।।
देवत सुख बखाण ।। देस प्रगत के माही ।।
प्रेम रूप सब सुख ।। ओर दीसे कुछ नाही ।।
सुखराम जोत का लोक में ।। जोत तातिया माण ।।
त्रुगटी मे सुख पांच हे ।। मेहेमा मेरी जाण ।।३।।

हे तात्या,त्रिगुटी मे शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध के ऐसे पॉच सुख है । महामाया मे देवतावो के लोक मे जैसे स्त्री का सुख है । प्रकृतीके लोकमे दो अती प्रेमी मित्रोमे जो आपसमे प्रेम रहता वैसे प्रेमरुपी सुख है । वहॉ सभी को आपस मे अती प्रेम उबकता । इसके अलावा ओर कुछ वहाँ पे समजता नही है । ज्योती के लोक मे जगमगाते ज्योती का सुख है ।।।३।।

अजर लोक ज्यां अलख हे ।। अणंद लोक मे नाँद ।।
ब्रज लोक मे ब्रम्ह हे ।। ज्हाँ चेतन का सवाद ।।
ज्हाँ चेतन का सवाद ।। इखर सो लोक कहावे ।।
वहाँ अनाहद नाद ।। खोल खिड़की जन जावे ।।
सुखराम क्हे सुण तातिया ।। इखर लोक संमाद ।।
अजर लोक मे अलख हे ।। अणंद लोक मे नाद ।।४।।

ज्योतीके आगे अजरलोक है । अजर लोक मे अलख,अलख,अलख इस ध्वनी का सुख है । आनंद लोकमे नाद सुनाई देता है वह कानोको अतिप्रिय लगता है । उस आनंदलोक के आगे वज्रलोक लगता है । वज्रलोक मे चेतनका स्वाद है याने स्त्री सुख अपने आप आता है । वज्रलोक के आगे इखरलोक लगता है । उस इखरलोक मे अनहद नाद होते रहता । वह अनहद नाद सुनकर सभी लोग मस्त हो जाते । इस अनहद नाद का वहाँ के लोगो को बहोत सुख लगता है । उस इखर लोकसे आगे जानेके लिये एक खिड्की लगती है । वह खिड्की खोलकर संत लोग आगे जाते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,इखर लोक मे जानेपर इखर याने नही टूटनेवाली समाधी लगती है ।।।४।।

सत्त लोक सत्तरूप हे ।। जिंग सब्द धुन होय ।।
आगे पूरण ब्रम्ह का ।। लोक कवावे दोय ।।

लोक कहावे दोय ।। फरक अेतो उण मांहि ।।
गळे नव तत्त की देहे ।। तेज सुख आणंद नांही ।।
सुखराम दुसरो लोक ओ ।। दसवो द्वार दे खोय ।।
फिर याँहा आयर ताँतिया ।। जनम धरे नही कोय ।।५।।

सत्तलोक सतरुप है । वहाँ जिंग शब्द की धुन सुनाई देती है । इसके आगे दो पुरण ब्रम्ह के लोक है । इन दोनो मे ऐसा फरक है । नवतत्त देह गलने के कारण दसवेद्वार के अंदर के पुरण ब्रम्ह मे जीव मे तेज नही रहता तथा सुख आनंद कुछ नही रहता । दसवेद्वार खुलने पे दुजा पुरण ब्रम्ह का लोक रहता वहाँ दिव्य शरीर मिलता । उस देह मे अनंत तेज रहता तथा वहाँ अनंत सुख जीव को मिलते । वह दसवेद्वार के परे पहुँचा हुवा हंस फिरसे मॉ के पेट मे कभी नही आता याने माया मे कभी जनम धारन नही करता ।।।५।।

कवत्त ।।

ओ सुण सुण नर ज्ञान ।। भेद हिरदे थिर कर हे ।।
सब सुरगुण बिध छाड़ ।। शिस सत्त गुर पद धर हे ।।
वे चवरासी मांय ।। हंस कबहू नही जावे ।।
ना देवत के लोक ।। सुरग मेही नाय रहावे ।।
सुखराम क्हे सुण ताँतिया ।। वे नर नर ही होय ।।
खंड ब्रेहेमंड पिंड सोज के ।। लेत समाधी जोय ।।६।।

सरगुणकी सभी विधीयॉ त्यागकर जो मनुष्य समाधी देशका ज्ञान सुनता और सतगुरुको शिरपर धारन करके वहॉ पहुँचनेका भेद हृदयमे स्थिर करता वह हंस समाधी देशमे पहुँचता । वह हंस मॉके गर्भमे कभी नही जाता,८४०००००योनीमे नही जाता,हंस स्वर्गादिकके कोई भी देवताके लोक नही जाता तथा नरकादिक और भूत प्रेतादिकके योनीमे कभी नही जाता । वह मनुष्य सदाके लिये समाधी लोकमे नही पहुँचता तबतक मनुष्यका मनुष्यही होता । और भेदसे खंड और ब्रम्हंड पिंड्मे खोजकर खंड और ब्रम्हंड पिंड्मे खोजकर खंड और ब्रम्हंड(३ लोक–स्वर्गलोक ,मृत्युलोक,पाताललोक) (१३लोक महामाया ,प्रकृती ,ज्योती,अजर,आनंद,वजर,इखर,अनहद, निरंजन,निराकार,शिवब्रम्ह, महाशुन्य,पारब्रम्ह)के परे के समाधी देश याने सतस्वरुप के लोक मे पहुँचता ।।।६।।

तत्त रूपी गुर देव ।। परख सरणे वे आवे ।।
राम राम ओ पद ।। सिंवर घट नांव जगावे ।।
उलट पिछम के घाट ।। मेर इक बिसूं फोडे. ।।
गिगन मंडळ कूं छेद ।। आण त्रुगटी मन जोडे. ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। ब्रम्ह लोक वे जाय ।।
बज्र पोळ जन खोल के ।। धस गया तां माय ।।७।।

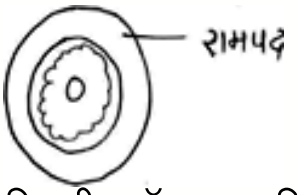

समाधी देशमे पहुँचनेकी चाहना रखनेवाले हंस तत्तरुपी गुरुदेव की पारख करके उनके शरणा जाता । रामपद का रटन करके राम का नाम घटमे जागृत करता और पश्चिम के मार्ग से उलटकर मेरुदंड मे के २१ मणी छेदन कर मेरुपर्वत पहुँचता । मेरुपर्वत के आगे त्रिगुटी मे मन लगाकर त्रिगुटी पहुँचता । त्रिगुटी को त्यागकर दसवेद्वार के पहलेवाले पुरण ब्रम्ह के लोक पहुँचता । पुरण ब्रम्ह के आगे वज्रपोल फोड्ता,दसवेद्वार खोलता और समाधी देश मे पहुँचता ।।।७।।

कुंडल्या ।।

संत समाधी जाय के ।। पाछा आवे कांय ।।
ब्रम्ह सुख में गरक हुवा ।। तो क्या सुख थो जुग माय ।।
तो क्या सुख थो जुग माय ।। भेद या को मुज दीजे ।।
भ्रम हमारा भॉग ।। ब्रम्ह के सरणे लीजे ।।
क्हे ताँत्यो गुरदेवजी ।। ओ भ्रम हे सब मांय ।।
संत समाधी जाय के ।। पाछा आवे कांय ।।८।।

तात्या ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहॉ कि,संत समाधी देश मे पहुँचने के बाद समाधी तोड्कर संसार मे फिरसे क्यो आता है? संत सतस्वरुप ब्रम्ह सुख मे गरक होने के बाद संसार मे वापीस आता तो समाधी देश मे कौनसा सुख नही था जिसकारण संत संसार मे रमन करने आता यह भेद मुझे दो । यह मेरा भ्रम भांग दो और मुझे सतस्वरुप ब्रम्ह के शरण मे लो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को कहता ।।।८।।

जळ मे डारे गाँगड़ी ।। तुरत गळे नई काय ।।
न्यारी करसूं स्याय के ।। फिर फिर लेत उठाय ।।
फिर फिर लेत उठाय ।। फेर पाछी ले डारे ।।
यूं दस पंधरे बार ।। निमक सब ही कुं गारे ।।
सुखराम क्हे सुण तातिया ।। यूं जन आवे जाय ।।
जळ मे डाऱ्यां लूण रे ।। तुरत गळे नही माय ।।९।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कहते कि,जैसे महिला रसोई बनाते समय आटेमे नमक मिलाती है । आटा बारीक रहता और नमक मिलाती है । आटा बारीक रहता और नमक के बडे बडे ढेले रहते और वे नमक मे मिल नही सकते इसलिये महिला परात मे आटा रखती और आटे के बिचोबिच पानी जमा रहनेके लिये आटेमे खड्डा बनाती । उसमे पानी डालती और उस पानीमे नमकके खडे डालती । वह खडे पानीमें मुराते रहती । वे खडे एकदम डालते ही गलते नही इसलिये हाथो से मसल-मसलकर पानी मे गलाते रहती । उस पानीमे नमक गलाकर फिर उस पानीमे आटा मिलाकर आटे

के लोये बनाती । जैसे नमक के ढेले पानीमे जल्दी नही गलते उस नमकको बार-बार पानीसे अलग करके हाथमे लेकर मसलते और पुन: पानीमे डालते इसतरह से आठ-दस बार करके उस सभी नमकको गलाते । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्याको कहते इसीतरहसे संत समाधीसे संसारमे आते संसारके प्रालब्ध भोगते फिर समाधीमे जाते फिर संसारमे आकर रहे हुये प्रालब्ध भोगते । एक दिन सभी प्रालब्ध खतम् हो जाते और संत सदाके लिये जैसे नमक पुर्णत: पानीमे मिलनेकें बाद पानीसे बाहर नही निकाले जाता वैसे संत समाधीसे जगतमे कभी नही आता । समाधी देश मे सदा के लिये पहुँच जाता और समाधी देश के सुख अखंडीत लेता ।।।९।।

तुम अे भारी बातरे ।। क्युं बूझत हे आय ।।
तेरे उर क्या भाव हे ।। सो मुझ कहो सुणाय ।।
सो मुझ कहो सुणाय ।। अेक तो हर पद चाहिये ।।
अेक सुणण की बात ।। प्रख ते सो तिहुं कहिये ।।
सुखराम कहे सुण तातियां ।। दोय भाव जग माय ।।
तूँ अे भारी बात रे ।। क्यूं बूझत हे आय ।।१०।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने तात्याको कहाँ कि,तू यह ऐसी भारी बात मुझसे किसलिये पुछ रहा है? तेरे हृदयमे क्या भावना है?वह मुझे स्पष्ट बता । एक तो माया के परे का हरपद चाहिये या तेरे मनमे मेरी बाते सुनने की चाहना है या मेरी परख करना चाहता यह मुझे बता । हे तात्या,जगत मे हरपद पाने की या मायापद मे ही जैसे के वैसे रहने की ऐसे दो भाव है । तेरा क्या भाव है यह मुझे बता ।।।१०।।

परख करे तूं संत की ।। हर मिलणे के काज ।।
तो आ पारख कीजिये ।। हरजन क्हे सो साझ ।।
हरजन क्हे सो साझ ।। फेर पारख आ कीजे ।।
ज्ञान ध्यान अर सीख ।। सुरत खेती पर दीजे ।।
सुखराम क्हे सुण ताँतिया ।। छाड़ भ्रम को राज ।।
जे प्रखे तुं संत कूं ।। हर मिलणे के काज ।।११।।

यदी तू रामजी को मिलने के लिये संत की परीक्षा करना चाहता है तो हरीजन जो कहते है वैसी साधना कर । हरीजन माया और ब्रम्हके परेका सतस्वरुपका ज्ञान-ध्यान समजाते है क्या यह पारख कर और वह ज्ञान-ध्यान सिख और सुरत माया से निकालकर हरीजन जो बताते है उस साधना पे दे । मायामे मोक्ष मिलेगा,आवागमन मिटेगा,काल छुटेगा और महासुख मिलेगा यह भ्रम छोड और भ्रम में डालनेवाली माया की साधनाये सभी त्याग ।।।११।।

ध्यान समे सुण संत की ।। आ देहे थंडी होय ।।

मस्तक सेती अत रेहे ।। कर पारख कहुँ तोय ।।
कर पारख कहुँ तोय ।। नेण उलटर पट लागे ।।
अेक कळा आ केख ।। नांव सिष के घट जागे ।।
सुख राम क्हे सुण तांतिया ।। अणभे कागद जोय ।।
ध्यान समे सुण संत की ।। आ देहे ठंडी होय ।।१२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्यासे बोले की ध्यान करते समय संत की देह ठंडी पड जाती है और मस्तक बर्फ के समान अती ठंडा पड्ता है क्या ? यह परीक्षा कर । ध्यान समय संत के आँखो के पट उलट लग जाते है क्या ? यह परीक्षा कर । उनकी एक अनोखी कला यह भी देख की उनके शरण मे आनेवाले शिष्य के घट मे समाधी देश मे पहुँचानेवाला हरीनाम जागृत होता है क्या?तथा शिष्य समाधी देश में पहुँचने के पश्चात समाधी देश की भयरहीत
बाणी जगत मे बोलने लगता है क्या ? यह परीक्षा कर ।।।१२।।

धिन धिन सेंसार में ।। हर मिलणे के काज ।।
पदवी छोड़े जक्त की ।। तीनुं जग को राज ।।
तीनुं जग को राज ।। मिलण की तजे उपाई ।।
पार ब्रम्ह को ध्यान ।। भेद बूझे गुर जाई ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। जे नर छोड़े राज ।।
धिन्न धिन्न संसार मे ।। राम मिलण के काज ।।१३।।

संसारमे वे धन्य है जिन्होंने रामजीको याने हरको मिलानेके लिये जगतकी राजा–बादशहा समान पदवी त्यागी है और साथ मे तीनो याने स्वर्ग,मृत्यु,पाताळ के लोक का राजा बनने का त्रिगुणी माया के सभी उपाय भी त्यागे है और पारब्रम्ह सतस्वरुप मे पहुँचानेवाले गुरु के पास जाकर पारब्रम्ह सतस्वरुपका भेद धारण किया है और पारब्रम्ह सतस्वरुपका ध्यान लगाया है । ।।१३।।

कवत ।।

ब्रम्ह मिलण के काज ।। ब्रम्ह को ध्यान संभावे ।।
राज मिलण का ध्यान ।। ज्ञान सब ही ले बावे ।।
ओ सुण तजिया राज ।। गरज सजेनी काई ।।
कर रह्यो फेर उपाय ।। राज की क्रिया जाई ।।
ज्हाँ लग ब्रम्ह न पावसी ।। कोटां करो ऊपाय ।।
सुखराम क्हे यूं तांतिया ।। भेद ध्यान के माय ।।१४।।

सतस्वरुप पारब्रम्ह मिलने के लिये सतस्वरुप पारब्रम्ह का ध्यान करता है और तीन लोको का राज मिलने का ध्यान,ज्ञान सभी छिटकाता है याने दूर करता है वही समाधी

देश पहूँचेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कहते है धरती का राज त्यागने से पारब्रम्ह सतस्वरुप पाने की गरज पूर्ण नही होती । हे तात्या,यहाँ का तो राज तूने त्यागा परंतु आगे तीन लोक का राज मिलने का ही उपाय कर रहा है । इन माया के राज मिलाने सरीखे करोडो उपाय किये तो भी पारब्रम्ह सतस्वरुप पद नही मिलेगा । पारब्रम्ह सतस्वरुप का ध्यान करने मे माया के करणीयो से निराला भेद है ।।।१४।।

कुंडल्या ।।

च्यार ध्यान जप च्यार रे ।। बिस्न लोक कूं जाय ।।
एक ध्यान एक जप रे ।। रहे जक्त के माय ।।
रहे जक्त के माय ।। प्रम पद कदे न पावे ।।
तप क्रिया सब ज्ञान ।। भक्त सो जुग मे आवे ।।
सुखराम क्हे सुण तांतियाँ ।। समझ भेद इण माय ।।
च्यार ध्यान जप च्यार रे ।। बिस्न लोक कुं जाय ।।१५।।

चार प्रकार के ध्यान,जप से विष्णू लोक का वासी बनता है तो एक ध्यान जप से जगत मे राजा बनता है परंतु परमपद का वासी कभी नही बनता । चार ध्यान,जप तथा एक ध्यान जप छोड्कर अन्य तप क्रिया ज्ञान साधते है वे भक्त जगत मे राव समान पदवीयाँ पाते है ऐसा सभी भक्तीयों मे अलग–अलग पराक्रम है यह भेद समज । इसीप्रकार हर की भक्ती करने से जगत मे का राव,राजा,विष्णू के देश के परे का महासुख का सतस्वरुप पारब्रम्ह देश का वासी बनता है यह भेद समज ।।।१५।।

सेवा पूजा जिज्ञ रे ।। दया ध्यान अे चार ।।
अे फळसी संसार में ।। आगे नही बिचार ।।
आगे नही बिचार ।। हट तप जग मे आवे ।।
भेद तप नर साझ ।। सुरग के लोक सिधावे ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। याहां नही ब्रम्ह बिचार ।।
सेवा पूजा जिज्ञ रे ।। दया ध्यान ये चार ।।१६।।

मायाकी सेवा,पूजा,यज्ञ,दया तथा माया का ध्यान ये चारो तीन लोक मे ही फल देंगे । ये चवथे लोक मे पहूँचने का कभी फल नही देंगे । हट करके तप करने से स्वर्ग मे जायेगा । इसप्रकार इन सभी साधनावोमे ब्रम्ह मिलने का भेद नही है । जगतमे ही रहने का भेद है । ।।१६।।

ज्ञान पाठ मंत्र जपे ।। अे सब हदका जाप ।।
सुरगुण पावे जनम धर ।। उलटा भुक्ते पाप ।।
ऊलटा भुक्ते पाप ।। प्रम पद कदे न पावे ।।
रेचक पूरक छाड ।। ध्यान भ्रुगुटी मे ल्यावे ।।

सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। यां सूँ मिले न आप ।।
ग्यान पाठ मंतर जपे ।। अे सब हद का जाप ।।१७।।

त्रिगुणी माया का ज्ञान और पाठ करना,मंत्र जपना ये सभी हद के याने माया मे रहनेवाले जप है । इसप्रकार के सगुण भक्ती का फल यही संसार मे ही जनम लेके माया के सुख लेने का मिलेगा परंतु इसके साथ ही ८४००००० योनी के महादु:ख के भोग पडेगे । इन सभी माया की भक्तीयो से काल के दु:ख रहीत महासुख का परमपद कभी नही मिलेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि रेचक,पूरक तथा कुंभक साधकर ध्यान भृगृटी मे चढाकर लाखो वर्षतक भृगुटीमे वास करनेसे भी महासुखका परमपद कभी नही मिलता ।(उदा.जांजुली ऋषी) । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्याको कहते है कि,सेवा,पुजा,यज्ञ,दया,ध्यान, हठयोग तपस्या,ज्ञान,पाठ,मंत्र,योग,रेचक–पूरक साधकर भृगुटी मे स्थिर होना इनसे आप याने पारब्रम्ह परमात्मा कभी नही मिलता कारण ये सभी हद के याने आकाश के निचे पहुँचने के जाप है ।।।१७।।

ममंकार ओऊं जपे ।। सोहँ अजपे जाण ।।
अे पहुँचे बेकुंट मे ।। च्यारूं मत्त बखाण ।।
च्यारूं मत्त बखाण ।। जोग रहे जग के मांही ।।
त्राटक बदेही ध्यान ।। ब्रम्ह लग कदे न जाही ।।
सुखराम क्हे सुण तां तियां ।। अे दिल भेद पिछाण ।।
ममंकार ओऊं जपे ।। सोहँ अजपे जाण ।।१८।।

चारो मत याने ममंकार,ओअम,सोहम तथा अजपा का जप के विधीसे बैकूंठ तक पहूँचता । उसके परे परमपद मे कभी नही पहुँचता । वैसेही जोग साधनेवाले जोगी,त्राटक तथा विदेही ध्यानी जगत मे ही रहते पारब्रम्ह परमात्मातक कभी नही पहुँचते । यह भेद तेरे निजदिल मे ज्ञान से समज ।।।१८।।

कवित ।।

पेलो ताटक ध्यान ।। दूसरो जोग कवावे ।।
तीजो बदेही ध्यान ।। मुन पर प्रथो लावे ।।
यामे साझन ध्यान ।। जप म्हे तोय बताया ।।
पाँचुं इंध्राँ काज ।। करम आगे कऊं भाया ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। तीरथ ब्रत बिचार ।।
ध्यान ज्ञान जप तप रे ।। सब सुण माया का यार ।।१९।।

पहला त्राटक ध्यान करना,दुसरा योग विद्या साधना,तिसरा विदेही ध्यान करना तथा चौथा मौन धारन करना ये सभी विधियाँ,साधन,ध्यान,जप जो मैने तुझे समजाये वे आगे पाँचो इंद्रियोके विषय भोग पानेके कर्म है । इसमे पाँचो विषयोके भोग काटकर वैराग्य

विज्ञान आनंद पानेकी रीत नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्याको समजाते है कि,तिरथ,व्रत, ध्यान,ज्ञान,जप–तप करना ये माया के पद मे ही रखने की साधनाये है माया के परे के पारब्रम्ह सतस्वरुप मे पहुँचने की साधना नही है ।।।१९।।

कुंडल्यो ।।

ब्रम्ह ध्यान बिन ध्यान सब ।। माया मिलण उपाय ।।
ब्रम्ह पेम बिन पेम सो ।। सब क्रमा की खाय ।।
सब करमा की खाय ।। नांव केवळ बिन सारा ।।
सब इद्याँ का भोग ।। करण कारण बिचारा ।।
क्रद सब्द के पेम बिन ।। प्रम मोख नही जाय ।
ब्रम्ह ध्यान बिन ध्यान सब ।। माया मिलण उपाय ।।२०।।

पारब्रम्ह सतस्वरुप के ध्यान के अलावा जो दुसरे माया के सभी ध्यान है वे माया की प्राप्ती के उपाय है । परमपद प्राप्ती के उपाय नही है । पारब्रम्ह सतस्वरुप के बिना माया से प्रेम करना कर्मो की खाण प्रगट करने सरीखा है । केवल नाम के बिना माया के सभी उपाय इंद्रीयो के भोग पाने की रीत है । कर्द शब्द याने इंद्रियो के विषय–वासनावो को कांपनेवाले शब्द के प्रेम बिना परपमोक्ष नही जाते आता । हे तात्या,तुम मोख मे जाने के लिये इंद्रियो को तपा रहा है परंतु तू क्रिया–साधना ऐसे कर रहा है जिससे आगे परमपद न जाते ३ लोक मे इंद्रियो के विषय–वासनावो के भोग मे अटके रहेगा ।।।२०।।

कवत ।।

सुभ असुभ बोहार ।। सरब इंद्याँ के तांई ।।
राव रंक क्या देख ।। सरब न्यारा जग मांई ।।
सब ही भुक्ते भोग ।। किसब भावे सो कीया ।।
यूं करणी जग माय ।। भोग आगे कूं जीया ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। यूं सब अेक उपाय ।।
प्रम पद मे तद मिले ।। सो बिध नही इण माय ।।२१।।

जगत की सरगुण की शुभ भक्तीयाँ याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा अशुभ भक्तीयाँ याने बली माँगनेवाले देवी देवता अवतार की भक्तीयाँ ये सभी सरगुण की भक्तीयाँ इंद्रियो के सुख पाने की भक्तीयाँ है । जैसे जगत मे राजा है वैसेही रंक है । ये सभी विषयो के भोग मे रचेमचे रहते है । रंक से लेकर राजातक हुन्नर याने धंदा अलग–अलग करते है परंतु सभी इंद्रियो के ही भोग भोगते इसीप्रकार शुभ तथा अशुभ करणीयाँ अलग–अलग है । शुभ करणीयाँवाले इंद्र समान स्वर्गादिक मे पाँच विषयो के भोग भोगते तो अशुभ करणीवाले राक्षसादिक योनी मे इंद्रियो के भोग भोगते । इसप्रकार सरगुण की शुभ तथा अशुभ भक्तीयो के उपाय इंद्रियो के सुख पाने के है । परमपद पाने के नही है परमपद पाने की विधी इन विधीयो मे नही है । परमपद पाने की विधी इन सभी विधीयो से न्यारी

है । वह विधी धारने से ही परमपद मे जाये जाता ।।।२१।।

प्रम पद को पेम ।। आप को आपी मांही ।।
प्रम पद को नांव ।। आप को आप जपाही ।।
प्रम पद को ध्यान ।। आप को आपी धारे ।।
प्रम पद सो उलट ।। आप कुं आपी तारे ।।
सुखराम तांतिया तत्त रे ।। यूं बिछडयो ज्यां जाय ।
तन मे मन होय नांव संग । चड़े पिछम दिस माय ।।२२।।

परमपद याने सतस्वरुप याने ने:अंछर ये अखंड्ति है । यह आदीसे ही हंस के घट मे(◉मन) है । त्रिगुणी माया यह हंस के घट मे कभी भी नही थी और कभी भी नही प्रगटती । वह मन के पॉचो विषयो के कर्म करनेसे पाँचो आत्मावो को आगे कर्म के रुप मे जड्ती । परमपद आदी से ही हंस मे है इसलिये आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कहते है कि परमपद से प्रेम खुद को ही खुदके ही हंस के घट मे से करना पड्ता । परमपद का जो ने:अंछर नाम है हंस को ही हंस के दिल मे से जपना पड्ता और हंस को खुद मे के परमपद से ध्यान लगाना पड्ता । ऐसा करने से हंस के घट मे का परमपद ही हंस को भवसागर से तारता । भवसागर तिरने के लिये बाहर की किसी भी माया की विधी धारन नही करनी पड्ती । हंस हंस के ही घटमे के ने:अंछर नाम के निजमन लगाता और वह हंस के घटमे का निजनाम हंस के मनुष्य तन को खंड–ब्रम्हंड बनाता और वह हंस आदी मे ब्रम्हंड से जैसा खंड मे आया वैसा खंड से पश्चिम के रास्ते से २१ स्वर्ग से ब्रम्हंड मे उलटता और जहाँ से आदी मे बिछ्डा था ऐसे सतस्वरुप मे पहुँचता ।।।२२।।

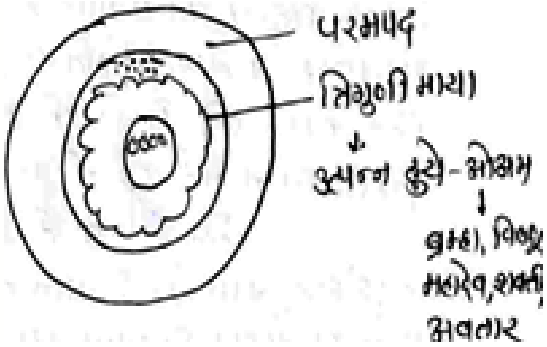

कुंडल्यो ।।

प्रम पद के मिलण की ।। दूजी नही उपाय ।।
चवदा तीनु लोक मे ।। फिर नर देखो जाय ।।
फिर नर देखो जाय ।। ब्रम्ह किण दिस ने पावे ।।
जिण पायो जब माय ।। सत्त गुर भेद बतावे ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। करद शब्द कूं स्याय ।।
प्रम पद के मिलण की ।। दूजी नही उपाय ।।२३।।

परमपदको प्राप्त करनेकी घटमे कर्द शब्द की विधी छोड दि तो दुजी माया की कोई भी विधी काम नही आती । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कहते है कि,३लोक१४ भवन (भुर, भुवर, स्वर, महर,जन,तप,सत,तल,अतल,वितल,सुतल,

तलातल,रसातल,महातल)तथा स्वर्गलोक,मृत्युलोक,पाताललोक ये सभी फिरकर देख लो। जिसने-जिसने परमपद की बताई हुई विधी छोड्के माया की विधीयाँ की है वे सभी ३ लोक १४ भवन मे इंद्रियो के विषयवासना मे अटके है । उन्होंने किसीने भी परमपद याने पारब्रम्ह सतस्वरुप नही पाया है । परमपद याने पारब्रम्ह सतस्वरुप उन्हीने ही पाया है जिसने हंस के घट मे ही परमपद से प्रेम करने का और उसका ध्यान करने का सतगुरु का भेद धारन कीया है ।।।२३।।

साखी ।।

अेक समे सुण राम के ।। आ बरती तन माय ।।
पार ब्रम्ह के लोक मे ।। किस बिध मिलिये जाय ।।१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को बोले,कि ,एक समय त्रेतायुगके राजा रामचंद्र के मनमे पारब्रम्ह सतस्वरुपके लोकमे जानेकी चाहना हुई । रामचंद्रने जगतके ग्यानी,ध्यानी से यह सुना था कि ,उस लोक मे मायाके किसी भी विधीसे जाते नही आता । मायाके विधी से जाते नही आता तो फिर मायाकी विधी छोड्कर किस विधीसे मिलते आता यह अपने गुरु वशिष्ठ से पूछने लगा ।।।१।।

कवित्त ।।

रामचंद्र कूं देख ।। ज्ञान वाष्ट मुनि दीयो ।।
तुम ही ब्रम्ह बिचार ।। भ्रम काहे उर लीयो ।।
जेसे त्रंग कहाय ।। सूर सें किर्णा फूटे ।।
ज्यूं बादळ सूं बुंद ।। सरब न्यारी होय छूटे ।।
अेसे तुम उण ब्रम्ह सूं ।। न्यारा कहिये जाण ।।
रामचंद्र कूं तांतिया ।। वाष्ट मुनि केहे ताण ।।२४।।

रामचंद्र का प्रश्न सुनकर वशिष्ठ पुनीने रामचंद्र को कहाँ की,हे रामचंद्र,तूही सतस्वरुप ब्रम्ह है । तेरे सिवा और कोई सतस्वरुप ब्रम्ह नही है । तेरे सिवा सतस्वरुप ब्रम्ह है यह विचार याने भ्रम तेरे उर मे क्यों उत्पन्न हुवा?जैसे समुद्र और समुद्र की लहर ये दो अलग-अलग दिखती परंतु दोनो भी समुद्र ही है वैसा तू और सतस्वरुप ब्रम्ह अलग अलग दिखते परंतु तु और सतस्वरुप ब्रम्ह एक ही है । जैसे सुरज से किरणे न्यारी फुटती तथा बादल से बुंद न्यारे छुटते वैसा तुम सतस्वरुप ब्रम्ह से न्यारे हो । जैसे सुरज और सुरज की किरणे सुरज ही है तथा बादल और बादल से निकले हुये बुंद बादल ही है ऐसे सतस्वरुपसे निकला हुवा तु तथा सतस्वरुप ब्रम्ह एक ही है,सतस्वरुप ब्रम्ह से तु न्यारा नही है ।।।२४।।

इसी बिध को ज्ञान ।। ब्होत बिध दीयो आई ।।
तुमही ब्रम्ह बिचार ।। और दुबध्या नही मांई ।।
सोच करो मत कोय ।। जग का काम सुधारो ।।

तीन लोक म्रजाद बांध ।। राकस सब मारो ।।
सुखराम कहे सुण तांतिया ।। राम न माने कोय ।।
वाष्ट मुनि पच हार के ।। ब्रम्ह बतायो जोय ।।२५।।

वशिष्ठ मुनी ने रामचंद्रको इस तरह का बहुत प्रकारके ज्ञानसे समजाया और रामचंद्रको तू ही सतस्वरुप ब्रम्ह है यह बताया । तुझमे और सतस्वरुप ब्रम्हके बिच दुविधा कुछ भी नही है याने फरक कुछ भी नही है । इसलिये तू सतस्वरुप ब्रम्हके लोकमे मिलने कि कुछ भी फिक्र मत कर । तू सतस्वरुप ब्रम्ह से इस संसार के जिस काम के लिये आया उस काम को पूर्ण कर । तू इन तीनो लोकोकी पालन–पोषण करने की विधी राक्षसोने जो बिघाडी वह सुधार । उत्पात करनेवाले सभी दृष्ट राक्षसो का संहार कर । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को बोले कि,वशिष्ठ मुनी की यह बात रामचंद्र ने जरासी भी नही मानी । अंत मे वशिष्ठ मुनी पच–पचकर हार गये तब रामचंद्र को वशिष्ठ मुनी ने सतस्वरुप ब्रम्ह बतलाया ।।।२५।।

कुंडल्यो ।।

राम कहे गुर देव ने ।। यूं तो सब ही राम ।।
पाँच तत्त के बस पड़या ।। सो नहि पूरण धाम ।।
सो नहि पूरण धाम ।। ब्रम्ह तो अेसो होई ।।
सदा सुख आणंद ।। दुख मासो नही कोई ।।
मो मे तो सब बस रहया ।। सुख दु:ख माया काम ।।
राम कहे गुरदेव ने ।। यूं तो सब ही राम ।।२६।।

रामचंद्र ने वशिष्ठ मुनी को कहाँ कि,ज्ञान समजसे देखा तो सबही राम ही है । फिर आप मुझे अकेले को ही राम कैसे कहते हो? जैसे जगत के सभी पाँच तत्व के बस पडे वैसे मै भी पाँच तत्त के बस पडा हुँ । पाँच तत्त का देश यह माया है । इसलिये मै पूर्ण राम नही हुँ । पूर्ण ब्रम्ह याने पूर्ण राम यह सदा सुख आनंद मे रहता । उसे दु:ख मासाभर भी नही रहता और मुझमे तो विषयो के सुख,काल के दु:ख और कामवासना भरी है । इसलिये मै पूर्ण राम याने ब्रम्ह नही हुँ । फिर तो सभी ही पूर्ण राम याने ब्रम्ह ही है ।।।२६।।

कवित ।।

ब्रम्ह सकळ घट माय ।। ब्रम्ह मे सब घट होई ।।
रामचंद्र तुम अेम ।। तुज बिन अेक न कोई ।।
दीजे भ्रम भगाय ।। ज्ञान कर देखो राई ।।
तीन लोक के माय ।। पुरष अेसो नही भाई ।।
सुखराम राम तब बोलिया ।। यूं तो सब सब मांय ।।
पूरण पद में घट नही ।। सो गुर कहिये आय ।।२७।।

वशिष्ठ मुनी रामचंद्र को बोले कि,वह पूर्ण ब्रम्ह तो सभी जीवो के घटघट मे है और उसी

ब्रम्ह मे सभी जीवो के घट है । इसीतरह से रामचंद्र तू सभी घट घट में है और तेरे मे सभी घट है । तेरे अलावा दुसरा कोई सतस्वरुप ब्रम्ह नही है । हे राजपुत्र,तेरा भ्रम भगा दे हे राजपुत्र तू ज्ञान करके देख ले कि तीनो लोकोमे तेरे जैसा दुसरा कोई भी ब्रम्ह पुरुष नही है । तब रामचंद्र वशिष्ठ मुनीसे बोला कि ऐसे तो सभी ही ब्रम्हके अंदर ही है और वह ब्रम्ह भी सभीमे है परंतु उस सतस्वरुप ब्रम्हके पूर्ण पदमे पाँच विषयोके मायावी घट नही है । उस पूर्ण पदका भेद मुझे बतावो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को समजाया ।।।२७।।

कुंडल्या ।।

माया मांहि घट हे ।। घट मे माया होय ।।
पूरण पद मे घट नही ।। सो ब्रम्ह कहिये जोय ।।
सो ब्रम्ह कहिये जोय ।। राम बुझ्यो गुर ताँई ।।
में तो सब मे होय ।। सरब हे मेरे मांई ।।
सुखराम क्हे प्रब्रम्ह में ।। तांत्या घट नही कोय ।।
माया मांही घट हे ।। घट मे माया होय ।।२८।।

रामचंद्र बोला कि ये सभी घट पाँच विषयोके माया पदमे है और इन सभी घटोमे पाँच विषयो की माया है । जिस पूरण ब्रम्ह मे पाँच विषयो के माया का घट नही उस सतस्वरुप ब्रम्ह की विधी खोजकर मुझे बतावो । ऐसे तो सभी मे ब्रम्हरुप मे मै हुँ और सभी मुझमे जो ब्रम्ह है उसमे है परंतु पारब्रम्ह सतस्वरुपमे पाँच विषय विकारोका घट नही है वह मुझे बतावो ।।२८।।

पार ब्रम्ह मे घट नही ।। ना पद हे घट मांय ।।
सो पद पुरण राम हे ।। सब जन क्हेतां जाय ।।
सब जन क्हेतां जाय ।। तीन गुण पांचुँ नाही ।।
मोसुं अे गुरदेव ।। निमष नही दूरा जाही ।।
राम कहयो गुर देव कूं ।। केवल राम बताय ।।
पार ब्रम्ह मे घट नही ।। ना पद हे घट माय ।।२९।।

पारब्रम्ह सतस्वरुप मे पाँच विषयो का विकारी घट नही है और वह पारब्रम्ह सतस्वरुप पाँच विषयो के विकारी घट मे नही है । वह पद माया मुक्त पूर्ण राम है । ऐसा सभी संत कह गये । तीन गुण रजोगुण,सतोगुण,तमोगुण ये भी उसमे नही है और पाँच इंद्रियो के पाँचो विषय भी उसमे नही है । उस ब्रम्ह मे तीनो गुण और पाँचो विषय नही है परंतु मेरे अंदर तो ये तीनो गुण और पाँचो विषय पलक झपकने इतना समय भी दूर नही रहते । इसलिये मै पूर्ण राम नही हुँ । इसलिये हे गुरुदेवजी,मुझे पूर्ण राम याने जिसमे माया का जरासा भी अंश नही ऐसा कैवल्य राम बतावो ।।।२९।।

बाष्ट मुनि क्हे रामजी ।। तुम ही ब्रम्ह कुवाय ।।
ब्रम्हा बिसन महेस सुर ।। सब तुज बंदे आय्य ।।
सब तुज बंदे आय ।। देख प्राक्रम तुज माही ।।
तीनु लोक संभाल ।। पुरष अेसो कोऊ नाही ।।
तुम माया तुम ब्रम्ह हे ।। तुम ही आवो जाय ।।
बाष्ट मुनि कहे रामजी ।। तुम ही ब्रम्ह कुहाय ।।३०।।

वशिष्ठ मुनीने रामजीसे फिरसे कहाँ कि सभी तुम्हे ही सतस्वरुप ब्रम्ह कहते है । ब्रम्हा,विष्णू , महादेव और इंद्र पकड्के सभी देवताये तुझे सतस्वरुप ब्रम्ह समजकर बंदना करते है । ऐसा सतस्वरुप ब्रम्ह का पराक्रम तुझमे है और तू भी तीनो लोक मे देख ले तेरे समान पराक्रमी पुरुष और कोई नही है । जगत मे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव के काम अड्ता तब तू ब्रम्ह होकर माया बनता और ये काम पूर्ण होते ही तू फिरसे सतस्वरुप ब्रम्ह बन जाता । इसप्रकार तू पूर्ण ब्रम्ह से माया मे आता और माया से ब्रम्ह मे जाना यह करते रहता ।।।३०।।

प्राक्रम तो सब राम कहे ।। माया को गुण होय ।।
क्हाँ कम जाफा इधक हे ।। म्हे नही मानु कोय ।।
म्हे नही मानु कोय ।। ब्रम्ह का अे लछ नाही ।।
तुम बेहेकावो मोय ।। झूट गुर कहिये नाही ।।
सुखराम कहे सुण तांतिया ।। ज्ञान द्रष्ट कर जोय ।।
प्राक्रम तो सब राम कहे ।। माया को गुण होय ।।३१।।

रामचंद्र वशिष्ठको कहता पराक्रम यह मायाका गुण है,सतस्वरुप ब्रम्हका नही । किसीमे पराक्रम कम है तो किसमे जादा है । ऐसा मुझमे पराक्रम जादा है । इसलिये मै सतस्वरुप ब्रम्ह हुँ यह मै नही मानता । सतस्वरुप ब्रम्हके गुण ऐसे कम जादा होनेके नही रहते । तुम मुझे झूठा-झूठा बताकर बहकावो मत । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कहते कि,तू ज्ञान दृष्टी से देख कम जादा पराक्रम यह माया का गुण है सतस्वरुप ब्रम्ह गुण नही है यह समज ।।।३१।।

काँहिक मांई इधक हे ।। काँहिक छुछम जाण ।।
माय सूं माया लडे ।। माया करे बखाण ।।
माया ही करे बखाण ।। स्हाय कर लेवे सोई ।।
माया उपज खप जाय ।। ब्रम्ह या मे नही होई ।।
सुखराम रामचंद्र तांतिया ।। इसी कही सुण ताण ।।
कांहिक मांही इधक हे ।। क्हां इक छुछम जाण ।।३२।।

किसीमे पराक्रम अधिक रहता है तो किसीमे पराक्रम कम होता है । जैसे

ब्रम्हा,विष्णू,महेश तथा इंद्र पकड्कर ३३०००००० देवता ये माया है । जो इन देवतावो पे जुलूम कर रहे वे राक्षस भी माया है । राक्षसो मे इन देवतावो से पराक्रम जादा है और मुझमे इन राक्षसो से जादा पराक्रम है इसलिये ब्रम्हा,विष्णू,महेश,इंद्र तथा सभी देवता मेरी वंदना करते है और राक्षसो के जुलूमो से मुक्त होने के लिये मेरे मायावी पराक्रम का आसरा लेना चाहते । जैसे जगत मे एक-दुसरे से लढते एक-दुजे की महिमा करते और एक-दुजे की सहायता करते वह माया है वह ब्रम्ह नही है मतलब माया ही माया से लढती और माया ही माया की महीमा बखाणती और माया ही माया को सहायता करती है ऐसा सभी संत कहते है । इसलिये जो जनमती है,खपती है और खतम् होती है वह माया है ब्रम्ह नही है । ऐसा ताणकर रामचंद्र ने अपने गुरु से कहाँ ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को बताया ।।।३२।।

पार ब्रम्ह नही मारसी ।। नां यां करे स्हाय ।।
ना जाया ना जन्म सी ।। नही वे आवे जाय ।।
नही वे आवे जाय ।। सदा आनंद रस रूपी ।।
सावन पलटे अंग ।। इधक कम छांय न धूपी ।।
सुखराम ज्ञान मे सायदी ।। राम कही आ माय ।।
पार ब्रम्ह नही मारसी ।। नां यां करे सहाय ।।३३।।

पारब्रम्ह यह किसी को मारेगा भी नही और किसी को सहायता भी नही करेगा । पारब्रम्ह आजदिन तक कभी जन्मा भी नही और आगे भी जनमनेवाला नही और पारब्रम्ह आता भी नही और जाता भी नही । पारब्रम्ह सदा आनंदरस रुपी है । उसके आनंद का स्वाद तथा स्वभाव कभी पलटता नही । वह छाया या धूप के समान कम-जादा भी होता नही । इसकी संतो के ज्ञान मे साक्ष है ऐसा रामचंद्र गुरु वशिष्ठ से बोला ।।।३३।।

बाष्ट मुनि कहे रामजी ।। आ भ्यासी तुम मांय ।।
तो अब पूरण ब्रम्ह की ।। कळ किमत कहुँ लाय ।।
कळ किमत केहुं लाय ।। ब्रम्ह वे हे तुम मांही ।।
बजर पोळ के पार ।। देहे मे कहिये नाही ।।
सुखराम क्हे धिन धिन गुरू ।। सुणो तातिया आय ।।
बाष्ट मुनि क्हे रामजी ।। आ भ्यासी तुम माय ।।३४।।

वशिष्ठ मुनी रामचंद्रसे बोले कि,अब तुझमे यह बात भासी है तो अब तुझे उस पूर्ण ब्रम्हकी कला और हिकमत लाकर मै तुम्हे बतलाता हुँ । वह ब्रम्ह तेरे अंदर ही है परंतु पूर्णरुपसे वह वज्रपोलके पार है । पूर्णरुपसे वज्रपोलके अंदर देहमे नही है । यह भेद सुनतेही रामचंद्र अपने गुरुको बार-बार धन्यवाद देता है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्याको बोले ।३४।

चेतन माया ब्रम्ह सूं ।। सब ही उत्पत होय ।।
तां का तम अवतार हो ।। वां आगे हर जोय ।।
वां आगे हर जोय ।। तत्त वे ब्रम्ह कवावे ।।
सदा रूप आनंद ।। ताय भेदी जन गावे ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। वां हाँ अवतार न लोय ।।
चेतन माया ब्रम्ह सूं ।। सब ही उतपत होय ।।३५।।

यह सभी चेतन माया और ब्रम्ह की उत्पती है । तुम भी चेतन माया और ब्रम्हके अवतार हो । उस माया–ब्रम्ह के आगे हर को खोजकर के देखो । इस माया–ब्रम्ह के आगे जो हर दिखाई देगा वह तत्त याने माया के परे का ब्रम्ह कहलाता है । वह तत्तब्रम्ह सदा आनंदरसरुपी है । उसे उसके भेदी संत भजते है । उस तत्तब्रम्ह मे रामचंद्र सरीखे मायावी अवतार या जगत के समान मायावी लोक नही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने तात्या को कहाँ ।।३५।।

चेतन को सुण जीव हे ।। फिर पाँचुं जग माय ।।
मन निज मन रंग रूप ले ।। दाणु देव कुवाय ।।
दाणु देव कुवाय ।। सरब जग भाई होई ।।
अे आपस के मांय ।। सुख दु:ख लेवे दोई ।।
पार ब्रम्ह तो यामे नही ।। ना वे आवे जाय ।।
चेतन को सुण जीव हे ।। फिर पाँचुं जग मांय ।।३६।।

राक्षस और देव इन दोनो का जीव यह चेतन स्वरुप का है । इन दोनो जीवो को पाँचो आत्मा है । दोनो जीवो को पाँचो तत्वो का देह है । इन दोनो जीवो मे मन,निजमन,रंग,रुप यह माया है । इसप्रकार राक्षस और देव ये सभी भाई–भाई है । ये देव और राक्षस आपस मे सुख–दु:ख लेते–देते है । इन दोनो मे पारब्रम्ह सतस्वरुप नही है । इनमे पारब्रम्ह सतस्वरुप प्रगटता भी नही और ये पारब्रम्ह सतस्वरुप मे जाते भी नही ।।।३६।।

जीव ही मारे देह कूं ।। जीव ही देत अहार ।।
ओ तो झगड़ो जीव को ।। जीव ही जीते हार ।।
जीव ही जीते हार ।। बात साची आ होई ।।
पण तम सब पर राव ।। राम कहिये इम सोई ।।
बाष्ट मुनि क्हे रामजी ।। सुण जुग अेह बुहार ।।
जीवीं मारे जीव कूं ।। जीवी देहे आहार ।।३७।।

जीव ही आहारके लिये दुजे जीव को मारता । यह जीव ही दुजे जीव से लढता और जितता और यह जीव ही दुजे जीव से लढने मे हारता । यह झगडा जीवो का है फिर भी

वशिष्ठमुनी रामचंद्र को कहते कि,सत्य बात यह है कि सिर्फ तू ही इन सभी जीवो के उपर का राजा है । ।।३७।।

राम कहे गुरू देव कूं ।। हो गुर सुणो पुकार ।।
इण म्हेमा मे क्या मिले ।। सुख दु:ख रेहे नित लार ।।
सुख दु:ख रेहे नित लार ।। मोय पदवी नही भावे ।।
दीजे ब्रम्ह बिचार ।। संत भेदी जन गावे ।।
पार ब्रम्ह बिन हंस ओ ।। फिट जीत्यो फिट हार ।।
राम कहे गुर देव कूं ।। हो गुर सुणो पुकार ।।३८।।

रामचंद्र ने गुरू से कहाँ कि,इस मायाकी महिमा होने मे मुझे क्या मिलेगा? ये सुख और दु:ख तथा काम तो हमेशा मेरे पिछे के पिछे ही लगे रहते है । जिससे ये सुख-दु:ख मिटेंगे ऐसे भेदी संतो के पारब्रम्ह विचार मुझे बतावो । पारब्रम्ह के सिवा हंस हारा तो भी उस हंस को धिक्कार है और जिता तो भी उस हंस को धिक्कार है ।।।३८।।

बाष्ट मुनि तब बोलिया ।। राम चंद्र सुण भेव ।।
पार ब्रम्ह तब भाससी ।। आतर करसो सेव ।।
आतर कर सो सेव ।। आप आपी कुं जोवो ।।
राम राम ओ सब्द ।। अर्ध उर्ध बिच खोवो ।।
सुखराम कहे सुण तांतिया ।। अखंड बताई सेव ।।
बाष्ट मुनि तब बोलीया ।। राम चंद्र सुण भेव ।।३९।।

वशिष्ठ मुनी ने रामचंद्र से कहाँ कि,हे रामचंद्र,पारब्रम्ह प्रगट करने की चाहना है तो आतूर होकर उसकी भक्ती कर और वह पारब्रम्ह खुद के हंसके उर मे खोज । राम राम शब्द आते-जाते साँस मे धारोधार ले । इसप्रकार यह साधना अखंड कर । इस भेद से पारब्रम्ह घट मे प्रगटेगा ।।।३९।।

कवत्त ।।

राम राम पद सिंवर ।। अर्ध उर्ध मन ल्यावो ।।
सुरत निरत धर माय ।। क्रद वो नांव जगावो ।।
वाँ के संग तुम होय ।। ब्रम्ह कूं देखो जाई ।।
पार ब्रम्ह को चेन ।। द्वार दसवे के माई ।।
सुखराम कहे सुण तांतिया ।। आ बिधदी गुर लाय ।।
राम चंद्र तब हर्ष के ।। बेठा ध्यान लगाय ।।४०।।

मुखसे राम-राम शब्दका स्मरन करते हुये आती साँसमे तथा जाती साँसमे मन,सुरत और निरत लगा । इस विधीसे कर्म काटनेका कर्द याने ने:अंछर शब्द कंठमे प्रगट होगा । उस ने:अंछर के संग तू दसवेद्वार पहुँचोगे । दसवेद्वार मे पहुँचते ही पारब्रम्ह के प्रगटने के सभी

चेन –चमत्कार तुझे दिखेंगे ।।।४०।।

कुंडल्या ।।

उलट गिगन मे चड गया ।। लग्यो त्रुगटी ध्यान ।।
अब आनंद घट ऊपना ।। फिर नही बूझे ग्यान ।।
फिर नही बूझे ज्ञान ।। राज रीतां सब छाडी ।।
दिन दिन इधक सरूप ।। सुरत आनंद मे गाड़ी ।।
सुखराम कहे सुण तातिया ।। राम रहया सुख मान ।।
उलट गिगन मे चड़ गया ।। लग्यो त्रुगटी ध्यान ।।४१।।

वशिष्ठ मुनीने बताये हुये भेद के अनुसार रामचंद्रने ध्यान लगाया और उस विधीसे रामचंद्र २१ स्वर्गके रास्तेसे गगनमे उलटकर त्रिगुटीमे पहुँच गया । त्रिगुटीके ध्यानमे रामचंद्रको आनंद आने लगा । इस आनंदमे रामचंद्रने सभी राज्य चलाने की रितीयाँ त्याग दी और दिन नये दिन सुरत त्रिगुटी के सुख मे गाड दी और सुख लेने मे मगन हो गया ।।।४१।।

छाड त्रुगटी ध्यान कूं ।। गया समाधी देस ।।
अब पार ब्रम्ह कूं प्रसिया ।। अंतर रही न रेस ।।
अंतर रही न रेस ।। धिन धिन कहे गुर के तांई ।।
अब मेरे आनंद ।। भ्रम राख्या नही मांई ।।
सुखराम राम सुण तांतिया ।। तज्या सकळ जग भेस ।।
छाड त्रुगटी ध्यान कूं ।। गया समाधी देस ।।४२।।

आगे त्रिगुटी को त्यागकर दसवेद्वार समाधी देश मे पहुँच गया और पारब्रम्ह का प्रगट अनुभव करने लगा । दसवेद्वार मे पारब्रम्ह मे और रामचंद्र मे रेष मात्र भी अंतर नही रहा । यह रामचंद्र को अनुभव होने लगा । रामचंद्र यह राजा था । रामचंद्र को राजवी माया के आनंदके सामने पारब्रम्हका अलौकिक आनंद मिल रहा था । इसलिये आनंद भेद देनेवाले गुरु वशिष्ठ के बार–बार धन्य मान रहा था । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कहते है कि,रामचंद्र ने पारब्रम्ह पाने के पशचात जगत के माया की सभी विधीयो को त्याग दिया और सभी भ्रम त्यागकर पारब्रम्ह के आनंद के समाधी मे मस्त हो गया ।।।४२।।

अब सब कूं चिंता पड़ी ।। ओ कुण करसी राज ।।
राम चंद्र तो आप को ।। कर बेठो जुग काज ।।
कर बेठो जुग काज ।। लोक सब चालर आयो ।।
कहे रिषजी कूं आण ।। क्हा तम भेव बतायो ।।
सुखराम देव रिष कुं कहे ।। बिगड गयो सुर काज ।

अब कहो सरणे कोण के । कहाँ हम जावां भाज ।।४३।।

अब ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती,इंद्र पकडकर सभी देवी-देवतावोको रावण राक्षससे स्वयम् को बचानेकी चिंता पडी । रामचंद्रने खुदका तो कारज कर लिया परंतु हमारा रावणके चंगुल से छुटने का काज नही हुवा । अब यह काज कौन करेगा? इस चिंता से सभी छोटे-मोटे देवता वशिष्ठ के पास चलकर आये और वशिष्ठ मुनी पे दु:ख बताते हुये कहाँ कि आपने रामचंद्र को पारब्रम्ह का भेद बताकर आनंद मे जरुर मस्त कर दिया परंतु हमारा मात्र रावण के जुलूमो से छुटने का कारज बिगड गया । अब आपही बतावो हम कहाँ भागकर जावे तथा रावण के जुलूमो से बचने के लिये किसके शरणा जावे ।।।४३।।

बाष्ट मुनि चिंता करी ।। अब काहा कीयो जाय ।।
ब्रम्हा बिस्न महेस को ।। कारज अडियो आय ।।
कारज अडियो आय ।। तबे रिष दया बिचारी ।।
रामचंद्र तज ध्यान ।। बात अेक मान हमारी ।।
सुखराम तात्या रामजी ।। युँ थिर हूवा माय ।।
बाष्ट मुनि चिंत्ता करी ।। अब क्हा कियो जाय ।।४४।।

वशिष्ठ मुनीको ब्रम्हा,विष्णू,महेश तथा सभी देवतावोके दु:ख देखकर इन देवतावोको रावणके जुलूमोसे बचानेके लिये क्या किया जाया इसकी चिंता पडी । ब्रम्हा,विष्णू,महेशका कारज अड गया इस फिकीरसे वशिष्ठ मुनीको दया आयी । वशिष्ठ मुनीको ब्रम्हा,विष्णु,महेश तथा देवतावो को रावण से मुक्त कराने के लिये दुजा कोई पराक्रमी पुरुष धरती पे दिख नही रहा था । इसलिये गुरु वशिष्ठ को रामचंद्र का ध्यान तोडना यही उपाय दिखा इसलिये वे रामचंद्र के पास आकर रामचंद्र को ध्यान तोडने को मनाया । रामचंद्र पारब्रम्ह के ध्यान मे गर्क हो गया था । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को बताया ।।।४४।।

केहे रहे बचन बिचार रिष ।। राम समाधी खोल ।।
बाष्ट मुनि रिष क्हे रहया ।। अेक बचन सुण बोल ।।
अेक बचन सुण बोल ।। देव सब ऊभा आई ।।
इँद्र सो करे पुकार ।। सुरां की गत न कोई ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। राम न बोल्या बोल ।।
केहे रहे बचन बिचार रिष ।। राम समादी खोल ।।४५।।

वशिष्ठ मुनी रामचंद्रसे विचार करके कहने लगे अरे रामचंद्र,समाधी खोल और मेरे से बोल । ये सभी देव आकर खडे है । ३३०००००० देवतावो का राजा इंद्र भी आकर पुकार कर रहा है और ये सभी देवता अपनी क्या गती होगी इस फिकीर मे पडे है । कई देवता रावण के कैद मे है वे कैसे छुटेगे?तथा बाकी रावणसे बचे हुये देवता भी रावण नही

छेडेगा ऐसे डरे हुये है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज तात्या को कह रहे है कि रामचंद्र पारब्रम्ह सतस्वरुप के समाधी मे इतना स्थिर हुवा था ।।।४५।।

राम समादी खोल के ।। कहयो गुरां सूं आय ।।
पार ब्रम्ह का चरण तज ।। असुर न मारूं जाय ।।
असुर न मारूं जाय ।। अर्ज मानो गुर देवा ।।
ओ मोसर ओ डाव ।। फेर कब पाऊं भेवा ।।
मेरो कारज बिगडे. ।। किसकी करूं सहाय ।।
राम समाधी खोल के ।। कही गुरां सूं आय ।।४६।।

अंतीम मे रामचंद्र ने बार-बार गुरु वशिष्ठ मुनी के कहने से समाधी खोली और गुरु वशिष्ठ से कहाँ पारब्रम्ह सतस्वरुप का चरण त्यागकर मै राक्षसो को नही मारुँगा यह मेरी आपसे अरज है । समाधी तोडुँगा तो पारब्रम्ह सतस्वरुप का सुख पाने का समय याने डाव फिर मै कब पाउँगा? मेरी पारब्रम्ह की समाधी त्यागने पे मेरा कारज बिगडता है ऐसा मेरा कारज बिगडा के मै दुजे की सहायता कैसे करुँगा? ।।४६।।

दया न कीजे झूट की ।। जिण संग बंधे पाप ।।
मेरो कारज सत्त कहुँ ।। काँय बिगाड़ो आप ।।
काँय बिगाड़ो आप ।। देव दाणू सब अेकी ।।
इनका अेक ही बुहार ।। ज्ञान कर लीजे देखी ।।
सुखराम राम सुण तांतियां ।। कही गुरूसे आप ।।
दया न कीजे झूट की ।। जिण संग बधे पाप ।।४७।।

रामचंद्र गुरु वशिष्ठ से ज्ञान से बोले,जिन संग पाप बंधते है ऐसे झूठो पे दया नही करनी चाहिये । मै जो पारब्रम्ह मे लिन होने का कारज कर रहा हुँ वह सत है और आप जो राक्षसो को मारने का कारज कह रहे वह झूठ है इसलिये आप मेरा सत कारज बिगडे ऐसा कुछ भी करो मत । देव और दानू ये सभी एक माया है । इनका जितना और हारना यही एकमात्र व्यवहार है यह आप ज्ञान कर देख लो । इसप्रकार रामचंद्र अपने गुरु वशिष्ठ को पारब्रम्ह सतस्वरुप से समाधी तोडकर पारब्रम्ह से दूर जाने को नही मान रहा था ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को कहाँ ।।।४७।।

कवीत ।।

तीन लोक की रीत ।। सदा अेसी बिध होई ।।
क्षण जीते क्षण हार ।। सुख दु:ख मिटे न दोई ।।
क्हे बो मारो जाय ।। काहां कारज व्हे यांरा ।।
च्यार दिनाकी बात ।। उरे अे मरसी सारा ।।
सुख राम राम सुण तांतिया ।। कही गुरां सूं आय ।।

या झूटी बातां करणे मे ।। मत बो वो धे:माय ।।४८।।

तीन लोकमे सदासे क्षणमे जितने और क्षणमे हारनेकी यही रित है । मायासे निकलकर पारब्रम्ह पदका सुख पानेकी रित नही है । इसकारण तीन लोकमेके जीवोके सुख–दु:ख मिटते नही । आप रावणको मारनेको कहते हो इससे देवतावोका सदाके लिये दु:ख मिटने का कारज कैसा होगा?ये चार दिनो की बात है । चार दिनोमे याने आगे–पिछे ये सभी मारनेवाले या मरनेवाले राक्षस तथा देव मर मिट जायेगे । इसलिये आप मुझे इन झूठी बातो मे न लगाते मेरी पारब्रम्ह की भक्ती मत छुड्वावो । मै दु:खोके खाईमे गिरुँगा यह मत होने दो । ऐसा रामचंद्र वशिष्ठ मुनीसे बोले यह आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने तात्याको बताया ।।।४८।।

कुंडल्या ।।

बाष्ट मुनि हट चट पड़े ।। रावण मारो जाय ।।
पीछे हम नही छेड़ सा ।। दीजो ध्यान लगाय ।।
दिजो ध्यान लगाय ।। काज नही बिगडे. तेरा ।।
ओ परमारथ साझ ।। भाव उर हे सिष मेरा ।।
सुखराम राम ने तांतिया ।। यूं समझायो आय ।।
बाष्ट मुनि हट चड पड़े ।। रावण मारो जाय ।।४९।।

वशिष्ठ मुनी के बार–बार समजाने पे भी रामचंद्र पारब्रम्ह की समाधी त्यागकर रावण को मारने का कबूल नही कर रहा था । आखिर मे वशिष्ठ मुनी गुरु इस रिश्ते से हठ पकड्कर रावण को मारने को रामचंद्र को मजबूर किया और समजाया कि रावण को मारकर आनेपर फिर ध्यान लगाकर पारब्रम्ह मे लिन हो जाना । फिर हम कभी पारब्रम्ह का ध्यान त्यागने को नही कहेगे । रावण को मारकर देवतावो पे दया करना यह परमारथ है । इससे तेरा कारज नही बिगडेगा ऐसा रामचंद्र को गुरु वशिष्ठ ने समजाया यह आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को बताया ।।।४९।।

राम कहे गुर देव कूं ।। किस कूँ मारूं जाय ।।
चवदा तीनु लोक मे ।। अेक पुर्ष रहयो छाय ।।
अेक पुर्ष रहे छाय ।। दूसरो दीसे नाही ।।
हातां कहो सरीर ।। कूण बिध काटयो जाही ।।
सुखराम ब्रम्ह जब भासियो ।। तब आ कही बजाय ।।
राम कहयो गुर देव कूं ।। किसकूं मारूं जाय ।।५०।।

रामचंद्र गुरु वशिष्ठ मुनी से पुछ रहे कि मै किसे मारुँ? आपने जो पारब्रम्ह का भेद दिया उस ज्ञान से मुझे ३लोक १४ भुवन मे एकमात्र पारब्रम्ह सतस्वरुप ही छाया दिख रहा । पारब्रम्ह सतस्वरुप के सिवा दुजा कोई पुरुष नही दिख रहा मतलब जो मुझ मे पारब्रम्ह

प्रगटा वही ३ लोक१४भवन मे राक्षस तथा देवता मे दिख रहा मतलब मुझमे,राक्षसमे और देवतामे फरक नही दिख रहा फिर मै राक्षसको मारना याने मेरे ही शरीर को अपने हाथसे काटना है । यह मुझसे कैसे संभव है? ऐसा रामचंद्रने घट मे पारब्रम्ह प्रगट होने पे अपने गुरु को बजा-बजाकर जतलाया ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को दिखाया ।।।५०।।

बाष्ट मुनि तब बोलिया ।। तीन लोक सच अेक ।।
पण सुभ असुभ बोहोर हे ।। सो घट भीतर देख ।।
सो घट भीतर देख ।। घेर मारग पर लावो ।।
आप आपको काम ।। ओर कूं कांही चावो ।।
सुख राम गुरा जब आ कही ।। सब सुर कारज लेक ।।
वाष्ट मुनि तब बोलियो ।। तीन लोक सच अेक ।।५१।।

इसपर गुरु वशिष्ठ मुनी शिष्य रामचंद्र से बोले कि तीन लोक १४ भवन मे एकमात्र पारब्रम्ह सतस्वरुप ही छाया है यह सत्य है परंतु शुभ और अशुभ ये न्यारे-न्यारे व्यवहार है यह घट के भितर ज्ञान से देखा तो शुभ और अशुभ ये आदिसे न्यारे-न्यारे है या एक है यह समज इसलिये अशुभ याने अत्याचारी रावण का नाश करने के लिये ही तेरा जनम हुवा है । यह काम दुजे ने करना यह तू क्यों चाहता है? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या से कहाँ इसप्रकार से गुरु वशिष्ठ ने सभी देवतो के कार्यो की ओर देखकर रामचंद्र को रावण मारने का समजाया ।।।५१।।

युं प्रचायर राम सूं ।। रावण मरायो जोय ।।
पार ब्रम्ह कूं छाड़ कर ।। लियो काळ अघ रोय ।।
लियो काळ अघ रोय ।। राम परबस हुवा भाई ।।
माया बडी बलाय ।। ड़ाव दे पकडे आई ।।
सुखराम क्हे सुण तांतिया ।। संत समाधी होय ।।
युं पर्चायर राम सूं ।। रावण मरायो जोय ।।५२।।

इसप्रकार से रामचंद्र को समजा बुजाकर रावण मारने लगाया । रामचंद्र ने पारब्रम्ह सतस्वरुप को त्यागकर वशिष्ठ मुनी के परवश होकर काल दोष के पाप कर लिये । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने तात्या को कहाँ कि,माया समाधी जानेवाले संत को दगा करके अपने डाव मे लेने के लिये ऐसी बडी चालाख है ।।।५२।।

।। इति तात्यां को संमाद संपूरण ।।